बुधो सभु जहानु, माया फासीअ फंद रे,
परचिया रहनि पिंड सां, भुलाए भगिवान,
जागि कढनि कीनकी, अंदर मों अभिमानु,
को सामी पुरखु सुजाणु, समुझी चढ़ियो सीर ते.

माया और माया के जाल में फँसे हुए मनुष्यों के संबंध में सामी साहब कहते हैं कि माया (अविद्या) ने सारे संसार को अपने फाँसी के फंदे में जकड़ लिया है। ऐसे बँधुआ मनुष्यों ने अपने शरीर को सब कुछ और सत्य समझ कर संतोष पा लिया है तथा भगवान को भुला दिया है। वे सजग हो कर अपने अंदर से अभिमान नहीं निकालते। कोई सुजान/ज्ञानी सत्पुरुष होगा, जिसने 'सत्य' को समझ कर अपने हृदय को निर्मल बना कर तथा मँझधार को पार कर प्रभु को प्राप्त किया होगा।

माया क्या है? माया प्रकृति है, माया अविद्या है, माया मन के अंदर समाया हुआ अज्ञान है। माया जीवन और मृत्यु, अच्छा और बुरा, ज्ञान और अज्ञान का मिश्रण है। वह सब, जिसमें हम बँधते हैं, माया है। माया व आवरण/पर्दा है, जो आत्मा को ढँकता है। मनुष्य का मन माया से प्रभावित हो कर ही सब कुछ सोचता है। माया जन्य सभी वस्तुएँ नाशवान हैं। माया का अस्थिर चंचल भोग, भोक्ता को भी अस्थिर और चंचल बना देता है। इसलिए माया के बंधन से मुक्त होना चाहिए। कबीर जैसे संतों ने माया को 'ठगनी' कहा है। सामी साहब ने माया को 'डायन' और 'बुरी बला' कहा है। साथ ही माया के 'मोहिनी' स्वरूप से बचने की बात भी कही है। क्योंकि माया के प्रभाव से ही मनुष्य स्वयं को 'देह' मानकर अभिमान करने लगता है। वह अपने शरीर से प्रेम करते हुए परमेश्वर से विमुख हो जाता है। बहुरूपिणी माया ने ठगनी बन कर सभी मनुष्यों को ठगने का कार्य शुरू कर दिया है। इस माया को भी ठगने का सामर्थ्य केवल संत-सत्पुरुष में होता है, जो न केवल स्वयं माया के प्रभाव से दूर रहते हैं, अपितु संसार को भी उसके प्रभाव से दूर रखने का महत् प्रयास करते रहते हैं। ज्ञानी जन ही माया से मुक्त होते हैं। संतों की संगत और साधना द्वारा सत्य ज्ञान से माया-मोहिनी का मिथ्या रूप या आवरण हट सकता है। सतगुरु की शरण में जाने से सत् शिष्य माया से मुक्त हो जाता है।

कबीर माया मोहिनी, सब जग घाला घानि।
कोई एक साधु ऊबरा, तोड़ी कुल की कानि॥

■